पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2024 की आपराधिक विविध सं.79243

थाना-कांड संख्या-6 वर्ष-2024 थाना-सी.बी.आई. मामला जिला-पटना से उत्पन्न

चंदन सिंह, पिता-धनंजय सिंह, निवासी, गाँव-मुरकलप, थाना-दरौली, जिला-सिवान ।

..... याचिकाकर्ता

बनाम

1. बिहार राज्य सरकार
2. बिहार के उप महानिरीक्षक के माध्यम से केंद्रीय जांच ब्यूरो

..... विपक्षीगण

उपस्थिति :

याचिकाकर्ताओं के लिए : श्री कुणाल तिवारी

राज्य के लिए : श्री अभिमन्यु शर्मा

सी. बी. आई. के लिए : श्री अविनाश कुमार सिंह,

श्री अंबर नारायण,

सुश्री बरखा,

श्री मुकल कुमार सिंह

अधिनियम/धाराएं/नियम:

• भारतीय दंड संहिता की धाराएं 407, 408, 409, 120, 120 बी

याचिका-भारतीय दंड संहिता की धारा 407, 408, 409, 120 के तहत दंडनीय अपराधों में जमानत प्राप्त करने के लिए दायर की गई। मामला सीबीआई द्वारा अपने हाथ में लिया गया और पुनः भारतीय दंड संहिता की धारा 120-बी सहपठित धारा 407, 408, 409 के तहत आरसी के रूप में दर्ज किया गया।

निर्णय: यह प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता "सॉल्वर गैंग" का सरगना था, जिसने एमबीबीएस पाठ्यक्रम में अध्ययनरत 5-6 मेधावी छात्रों को संगठित किया। अन्य साजिशकर्ता से धन प्राप्त करने के बाद, होटल में लीक हुए प्रश्नपत्रों को अलग-अलग समूहों द्वारा हल किया गया। (पैरा 21)

याचिकाकर्ता और अन्य "सॉल्वर गैंग" के सदस्यों की भूमिका इस अपराध में केंद्रीय रही, जिससे अपराध का अंतिम उद्देश्य पूरा हुआ। यदि लीक हुआ प्रश्नपत्र अकादमिक रूप से मेधावी उम्मीदवारों द्वारा हल न किया जाता, तो इस प्रकार का अपराध घटित नहीं होता, जिससे हजारों मेडिकल अभ्यर्थियों के करियर और भविष्य को खतरा हुआ। सॉल्वर गैंग की गतिविधियाँ परीक्षा प्रणाली की पवित्रता और विश्वसनीयता को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं। (पैरा 22)

याचिकाकर्ता और अन्य ने चिकित्सा प्रवेश परीक्षा की निष्पक्षता और अखंडता को दूषित किया, जिससे परीक्षार्थियों का परीक्षा प्रक्रिया में विश्वास कमजोर हुआ। (पैरा 23)

याचिकाकर्ता के विरुद्ध गंभीर आरोप हैं, जिसमें गहरी साजिश निहित है। (पैरा 24)

जमानत याचिका खारिज की जाती है। (पैरा 25)

=====

पटना उच्च न्यायालय का निर्णय आदेश

=====

गणपूर्ति: माननीय न्यायमूर्ति श्री अनिल कुमार सिन्ह

मौखिक आदेश

8 14-02-2025 1. याचिकाकर्ता के विद्वान वकील को सुना, राज्य के लिए अतिरिक्त लोक अभियोजक और केंद्रीय जांच ब्यूरो के लिए विद्वान वकील को सुना ।

2. याचिकाकर्ता ने भारतीय दंड संहिता की धारा 407,408,409,120 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए दर्ज शास्त्री नगर पुलिस स्टेशन केस नंबर 358/2024 के संबंध में नियमित जमानत मांगी है। इसके बाद, मामले को केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा अपने हाथ में ले लिया गया और भारतीय दंड विधान की धारा 407,408,409 के साथ पठित धारा 120-बी के तहत आर. सी. संख्या 221/2024 (ई) दिनांक- 23.06.2024 के रूप में पुनः पंजीकृत किया गया।

3. अभियोजन पक्ष का मामला, प्रथम सूचना रिपोर्ट में लगाए गए आरोप के अनुसार, यह है कि सूचक , शास्त्रीनगर पुलिस स्टेशन, पटना के इंस्पेक्टर-सह-एस. एच. ओ. को गश्त के दौरान अपने वरिष्ठ अधिकारियों से जानकारी मिली कि एन. ई. ई. टी. यू. जी. परीक्षा, 2024 में, एक संगठित गिरोह, जिसमें कुछ छात्र कर्मचारियों के साथ ने मिलीभगत से प्रश्न पत्रों की हिरासत की श्रृंखला की अखंडता और पवित्रता का उल्लंघन किया है और उसे लीक कर दिया है। सूचक को जानकारी मिली कि गिरोह के कुछ सदस्य सफेद रंग की रेनॉल्ट डस्टर कार में घूम रहे थे। सफेद रंग की रेनो डस्टर कार, जिसका पंजीकरण संख्या जे. एच. 01बी. डब्ल्यू-0019 था, को रोक लिया गया, जहाँ से तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया, जिन्होंने अपने नामों का खुलासा शिकंदर यादवेंदु, अखिलेश कुमार और बिट्टू कुमार के रूप में किया। तलाशी लेने पर चार उम्मीदवारों अभिषेक कुमार, शिवनंदन कुमार, आयुष राज और अनुराग यादव के प्रवेश पत्र बरामद किए गए। गिरफ्तार सह-आरोपी शिकंदर यादवेंदु की जेब से दो मोबाइल फोन भी बरामद किए गए। प्रश्न पत्रों के संबंध में पूछताछ पर, सह-आरोपी शिकंदर यादवेंदु ने बताया कि छात्र विभिन्न केंद्रों पर परीक्षा दे रहे हैं और उनकी परीक्षा की व्यवस्था उनके द्वारा की गई

थी। नीट यू जी परीक्षा, 2024 में शामिल होने वाले कुछ छात्रों को नीट के प्रश्नों के उत्तर याद करने के लिए स्कूल में रखा गया था।

4. इसके बाद, पुलिस परीक्षा केंद्रों में से एक, यानी डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, बी.एस.ई.बी. कॉलोनी, पटना में पहुंची, जहाँ सह-अभियुक्तों और परीक्षार्थियों में से एक, आयुष राज परीक्षा दे रहा था। जब परीक्षा समाप्त हुई, तो पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया और पूछताछ के दौरान, उसने खुलासा किया कि 04.05.2024 को उसे अन्य छात्रों के साथ, खेमनिचक, पटना में स्थित लर्न बॉयज़ होस्टेल और लर्न प्ले स्कूल ले जाया गया था और उन्हें याद रखने के लिए हल किए गए प्रश्न पत्र प्रदान किए गए थे। प्रतियोगी परीक्षा में सभी प्रश्न उसी प्रश्न पत्र से आये थे।

5. जहां तक वर्तमान याचिकाकर्ता का संबंध है, उसका नाम जांच के दौरान, केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा आपराधिक प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 173 (8) के तहत दायर दूसरे पूरक आरोप पत्र में पटना सॉल्वर गैंग समूह के प्रमुख के रूप में सामने आया है और उसे आरोपी नं. 29 बनाया गया है।

6. याचिकाकर्ता के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 109, 201, 380, 409, 411, 420 के साथ पठित धारा 120-बी और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 13 (1) (ए) के साथ पठित धारा 13 (2) के तहत आरोप पत्र दायर किया गया है।

7. याचिकाकर्ता के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि याचिकाकर्ता का नाम प्रथम सूचना रिपोर्ट में नहीं है और दूसरे पूरक आरोप पत्र में जांच के दौरान वर्तमान मामले में उसका नाम सॉल्वर के रूप में सामने आया है। याचिकाकर्ता एक छात्र है, जो एम्स, पटना में एमबीबीएस पाठ्यक्रम के तीसरे वर्ष में पढ़ रहा है। याचिकाकर्ता ने एन. ई. ई. टी. यू. जी. परीक्षा, 2024 के प्रश्न पत्र को राज गेस्ट हाउस, राम नगर, हजारीबाग में कभी हल नहीं किया, जैसा कि आरोप लगाया गया है और वह 05.05.2024 को राजरप्पा मंदिर में पूजा करने गया था और यात्रा के दौरान, याचिकाकर्ता राज गेस्ट हाउस में रुका था। याचिकाकर्ता एक मेधावी

छात्र है और एक डॉक्टर के रूप में उसका करियर उज्ज्वल है। याचिकाकर्ता ने कथित तरीके से कोई अपराध नहीं किया है और न ही उसके पास से कोई आपत्तिजनक सामग्री और न ही कोई प्रश्न पत्र मिला है। जाँच के दौरान कोई सबूत एकत्र नहीं किया गया है और आरोप पत्र में कोई सामग्री नहीं लाई गई है जो दर्शाता है कि याचिकाकर्ता को प्रश्न पत्र हल करने के लिए कोई पैसा मिला है। वह आगे प्रस्तुत करता है कि आरोप पत्र पहले ही प्रस्तुत किया जा चुका है और सक्षम अदालत द्वारा संज्ञान लिया गया है। याचिकाकर्ता 18.07.2024 के बाद से हिरासत में है और उसे हिरासत में रखने से किसी भी उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी। याचिकाकर्ता का पूरा करियर दांव पर है और न्यायिक हिरासत के कारण वह एमबीबीएस परीक्षा में भाग नहीं ले पा रहा है और दूसरे वर्ष की परीक्षा में याचिकाकर्ता जेल से उपस्थित हुआ।

8. दूसरी ओर, केंद्रीय जांच ब्यूरो के विद्वान वकील जमानत की प्रार्थना का जोरदार विरोध करते हैं और प्रस्तुत करते हैं कि विभिन्न राज्यों और शहरों, अर्थात् पटना, राजस्थान और चेन्नई से समाधान करने वाले गिरोह के तीन समूह थे। याचिकाकर्ता सॉल्वर गिरोह का नेता था, विशेष रूप से पटना सॉल्वर समूह का नेतृत्व याचिकाकर्ता ने किया था और इसमें कुमार शानू, राहुल आनंद, करण जैन, सुरभी कुमारी, रौणक राज और अमित कुमार शामिल थे। अमित कुमार अपने कॉलेज के साथी सनोज कुमार यादव को भी अपने साथ हजारीबाग लाए थे। सनोज कुमार यादव को छोड़कर ये छात्र 05.05.2024 को राज गेस्ट हाउस, हजारीबाग गए और एन. ई. ई. टी. यूजी प्रश्न पत्र को हल किया। ।

9. जाँच से पता चला कि सह-अभियुक्त संजय कुमार ने वर्ष 2021-2022 में याचिकाकर्ता से एन. ई. ई. टी. यू. जी. परीक्षा में एक डमी उम्मीदवार के रूप में उपस्थित होने के प्रस्ताव के साथ संपर्क किया और रुपये का भुगतान करने का वादा किया। सरकारी सीट हासिल करने के बदले में 15 लाख। एन. ई. ई. टी. यू. जी. परीक्षा, 2024 के लिए, सह-अभियुक्त संजय कुमार ने याचिकाकर्ता को नकली उम्मीदवारों की व्यवस्था करने का काम सौंपा। संजय कुमार के निर्देश के तहत, याचिकाकर्ता ने अन्य सह-अभियुक्त व्यक्तियों को डमी

उम्मीदवारों के रूप में बैठने के लिए प्रबंध किया। सह-अभियुक्त संजय कुमार याचिकाकर्ता और अन्य उम्मीदवारों को एन. ई. ई. टी. 2024 परीक्षा प्रपत्र भरने के लिए उनकी तस्वीरें लेने के लिए एम्स, पटना के पास फुलवारीशरीफ में एक फोटो स्टूडियो में ले गए। रौणक राज और अमित कुमार नामक सह-अभियुक्त व्यक्तियों ने अपनी तस्वीरें और हस्ताक्षर सीधे सह-अभियुक्त संजय कुमार को वॉट्सऐप के माध्यम से भेज दिए। उक्त सह-अभियुक्त संजय कुमार ने पूरी प्रक्रिया की व्यवस्था की, जिसमें तस्वीरों के लिए भुगतान करना और एन. ई. ई. टी. आवेदन पत्र के लिए उनके हस्ताक्षर एकत्र करना शामिल था। इसके बाद, उन्होंने एन. ई. ई. टी. यू. जी. परीक्षा, 2024 में डमी उम्मीदवारों के रूप में उपस्थित होने का अपना निर्णय बदल दिया।

10. सह-अभियुक्त संजय कुमार के कहने पर, याचिकाकर्ता ने अन्य लोगों के साथ गंगा दामोदर एक्सप्रेस से कोडरमा की यात्रा की; जबकि एक अन्य सॉल्वर, सुरभी कुमारी, रांची से सीधे कोडरमा की यात्रा की, सॉल्वर अमित कुमार ने इंडिगो उड़ान से 02.05.2024 को चेन्नई से रांची की उड़ान भरी, और 03.05.2024 पर कोडरमा पहुंचे, सह-अभियुक्त और सॉल्वर रौणक राज ने भी मुंबई से रांची की उड़ान भरी और फिर हजारीबाग पहुंचे, सह-अभियुक्त और सॉल्वर करण जैन ने सह-अभियुक्त आरोपी कुमार अभिषेक द्वारा बुक किए गए टिकट पर ट्रेन से पटना से कोडरमा की यात्रा 04.05.2024 को हजारीबाग आने के लिए की।

11. जांच में आगे पता चलता है कि याचिकाकर्ता कुमार शानू और राहुल आनंद, कुमार अभिषेक और टिंकू कुमार के साथ कोडरमा के रैमसन होटल में रुके थे। बाद में वे होटल तारा टावर चले गए, जहाँ वे 03.05.2024 तक रहे। 03.05.2024 को, समूह हजारीबाग के श्री विनायक होटल में स्थानांतरित हो गया। सभी होटल बुकिंग सह-अभियुक्त व्यक्तियों, संजय कुमार और कुमार अभिषेक द्वारा की गई थी।

12. जांच से आगे पता चलता है कि राज गेस्ट हाउस में सॉल्वर ओं को हल करने के लिए विशिष्ट विषय सौंपे गए थे। याचिकाकर्ता, राहुल आनंद और अमित कुमार के साथ थे। फिजिक्स के पेपर को हल करने के लिए जिम्मेदार करण जैन को सभी कठिन और समय लेने

वाले प्रश्नों को संभालने की जिम्मेदारी दी गई थी। सॉल्वर कुमार शानू के साथ सॉल्वर दीपेंद्र शर्मा और संदीप को जीव विज्ञान का पेपर हल करने की जिम्मेदारी दी गई थी, जबकि सॉल्वर सुरभी कुमारी और रौणक राज को रसायन विज्ञान का पेपर हल करने की जिम्मेदारी दी गई थी।

13. प्रश्नों को हल करने के बाद, याचिकाकर्ता और सह-अभियुक्त सुरभी कुमारी को प्रतीक्षा करने वाले उम्मीदवारों को निर्देश देने के लिए नीचे ले जाया गया कि उत्तरों को कैसे याद रखा जाए और उनकी शंकाओं को कैसे दूर किया जाए। इसके तुरंत बाद, सॉल्वर राहुल आनंद, करण जैन, रौणक राज, दीपेंद्र शर्मा और संदीप उसी कार्य को करने के लिए उनके साथ शामिल हो गए। इसके बाद, उन्हें हल किए गए प्रश्न पत्रों को नष्ट करने के लिए कहा गया।

14. सॉल्वर गिरोह के सभी सदस्यों को किशतों में पैसे दिए गए और याचिकाकर्ता को कुल रु 7,19,000-कुमार अभिषेक और संजय कुमार से मिले। सह-अभियुक्त संजय कुमार ने याचिकाकर्ता को उसके बैंक खाते में 70,000/-रुपये और सह-अभियुक्त कुमार अभिषेक ने भी 649000 रुपये याचिकाकर्ता को संजय कुमार के कहने पर हस्तांतरित किए।

15. याचिकाकर्ता ने अमित कुमार सिंह के सहयोगी सह-आरोपी संजय कुमार के साथ साजिश में राज गेस्ट हाउस, हजारीबाग के लिए छह सॉल्वरओं की व्यवस्था की। याचिकाकर्ता का स्थान 3 से 5 मई, 2024 को हजारीबाग में पाया गया था। याचिकाकर्ता ने अन्य अभियुक्त व्यक्तियों (सॉल्वरओं) के साथ प्रश्न पत्र हल किया।

16. केंद्रीय जांच ब्यूरो के विद्वान वकील ने आगे कहा कि मामले की जांच अभी तक पूरी नहीं हुई है और एन. ई. ई. टी. यू. जी. परीक्षा पेपर लीक घोटाले के मुख्य साजिशकर्ता और मास्टरमाइंड को अभी भी गिरफ्तार किया जाना बाकी है। इस प्रकार, याचिकाकर्ता को जमानत पर रिहा करने से मामले की आगे की जांच में बाधा आ सकती है।

17. जवाब में, याचिकाकर्ता के विद्वान वकील प्रस्तुत करते हैं कि केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा केवल एक बयान है कि धन बैंक हस्तांतरण के माध्यम से भेजा गया था; जबकि इस तथ्य को साबित करने के लिए आरोप पत्र में कोई सामग्री नहीं है।

18. मैंने सभी पक्षों के विद्वान वकील को सुना है और अभिलेख पर सामग्री का अध्ययन किया है।

19. पेपर लीक के संदर्भ में, सॉल्वर गिरोह लीक हुए प्रश्न पत्रों को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिसे बाद में गिरोह के अन्य सदस्यों द्वारा वितरित और प्रसारित किया जाता है। सॉल्वर गिरोह इस तरह की सार्वजनिक परीक्षा के एक या अधिक परीक्षार्थियों को गलत लाभ या गलत सहायता प्रदान करता है। पेपर लीक के अंदरूनी सूत्र सॉल्वर गिरोह को लीक हुए प्रश्न पत्र प्रदान करते हैं और एक बार लीक हुए प्रश्न पत्र प्राप्त हो जाने के बाद, सॉल्वर गिरोह प्रश्न पत्र को हल करने पर काम करता है।

20. सॉल्वर गिरोहों में ऐसे व्यक्ति शामिल होते हैं, जो शैक्षणिक रूप से मजबूत होते हैं और सटीक उत्तर प्रदान करने में सक्षम होते हैं। लीक हुए प्रश्न पत्र को हल करने के बाद, इसे अभ्यर्थियों के एक समूह के बीच वितरित किया जाता है, जो इसके लिए भुगतान करने को तैयार होते हैं। यह वितरण विभिन्न माध्यमों के माध्यम से हो सकता है, जिसमें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, मैसेजिंग ऐप या व्यक्तिगत रूप से भी शामिल हैं।

21. जांच के दौरान एकत्र की गई सामग्री से, जैसा कि आरोप पत्र से पता चलता है, ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता सॉल्वर गिरोह का नेता था, जिसने एमबीबीएस पाठ्यक्रम में पढ़ने वाले 5 से 6 अकादमिक रूप से मजबूत व्यक्तियों की व्यवस्था की और अन्य साजिशकर्ताओं से पैसे प्राप्त करने के बाद, लीक हुए प्रश्न पत्रों को हजारीबाग के पास एक होटल में अलग-अलग समूहों द्वारा हल किया गया था। यह जांच के दौरान आया है कि प्रश्न पत्र ओएसिस स्कूल, हजारीबाग से लीक हुआ था।

22. उपरोक्त पर विचार करते हुए, मेरा विचार है कि याचिकाकर्ता और सॉल्वर गिरोह के अन्य सदस्यों की भूमिका अपराध करने और अपराध के अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि लीक हुए प्रश्न पत्र को अकादमिक रूप से मजबूत उम्मीदवार द्वारा हल नहीं किया जाता, तो इस तरह का अपराध नहीं किया जाता, जिससे हजारों चिकित्सा उम्मीदवारों का करियर और भविष्य खतरे में पड़ जाता। सॉल्वर गिरोहों की गतिविधियाँ परीक्षा प्रक्रिया की पवित्रता और अखंडता को गंभीर रूप से कमजोर करती हैं।

23. वर्तमान मामले में, सॉल्वर गिरोह ने मौद्रिक और गलत लाभ के लिए गिरोह के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर भ्रष्ट प्रथाओं को अपनाकर एक संगठित तरीके से काम किया है। याचिकाकर्ता और सॉल्वर गिरोह के अन्य सदस्यों ने उन उम्मीदवारों के लिए एक अनुचित लाभ पैदा किया, जो उत्तरों के लिए भुगतान कर सकते हैं, जबकि ईमानदार उम्मीदवारों को नुकसानदायक स्थिति में रखा गया था। याचिकाकर्ता और अन्य लोगों ने चिकित्सा परीक्षा की निष्पक्षता और अखंडता को प्रदूषित किया, जिससे परीक्षा प्रक्रिया में उम्मीदवारों का विश्वास कम हो गया।

24. याचिकाकर्ता के खिलाफ आरोप गंभीर प्रकृति का है, जिसमें गहरी साजिश है। तदनुसार, मैं उपरोक्त चर्चा साथ ही आरोप की प्रकृति और उसके समर्थन में एकत्र किए गए साक्ष्य को ध्यान में रखते हुए याचिकाकर्ता को नियमित जमानत देने के लिए इच्छुक नहीं हूँ।

25. तदनुसार, यह आवेदन खारिज किया जाता है।

ए. एफ. आर /

(अनिल कुमार सिन्हा, न्यायाधीश)

प्रभाकर आनंद/-

खंडन (डिस्क्लेमर)-स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।